Krishna Nand M.A II Sem (2)

1

(ii) अध्ययन अभिकल्प (Design of the study)

इस अवस्था में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के लिए किसी एक उचित अभिकल्प (Design) का चुनाव किया जाता है। अभिकल्प दो प्रकार के होते हैं पहला प्रयोगात्मक अभिकल्प और दूसरा अप्रयोगात्मक अभिकल्प। शोधार्थी द्वारा आवश्यकतानुसार किसी एक अभिकल्प को अपनाया जाता है। जरूरत के अनुसार आधे पुरुष और आधा स्त्री लिया जा सकता है। प्रतिदर्श के चयन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्श (Random sample) या स्तरित प्रतिदर्श (Stratified sample) का सहारा लिया जा सकता है।

(iii) उपकरण और परीक्षण (Tools and Test)

शोधकार्य के अनुरूप उपकरणों एवं परीक्षणों का चुनाव शोधकर्ता द्वारा किया जाता है। शोधार्थी द्वारा यह निर्णय लिया जाता है कि सम्बन्धित शोध कार्य के लिए कौन-कौन से उपकरण और किन परीक्षणों की आवश्यकता पड़ने वाली है। प्रत्येक शोध में प्रदत्त (Data) संग्रह के लिए कुछ खास उपकरणों तथा परीक्षणों का व्यवहार किया जाता है। कभी-कभी शोधार्थी आवश्यकता के अनुरूप स्वयं परीक्षण का निर्माण भी करते हैं।

Krishna Nand M.A II Sem (1)

5

गलत कुछ भी हो सकती है।

परिकल्पना निर्माण में कुछ तथ्यों पर ध्यान देना जरूरी होता है। जैसे-

(I) परिकल्पना शोध्य समस्या से संबंधित होना आवश्यक है।

(II) परिकल्पना को एककथन के रूप में होना चाहिए।

(III) परिकल्पना में दो या अधिक चरों की बीच संबंध के बारे भविष्यवाणी होनी चाहिए।

(IV) परिकल्पना की जाँच अनुभविक अध्ययनों के आधार पर होनी चाहिए

(5) विधियाँ (Methods) :—

इस अवस्था या चरण में निम्नांकित बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है —

(I) प्रतिदर्श (Sampling) :—

प्रतिदर्श चयन में अध्ययन के अनुकूल प्रतिदर्श का होना आवश्यक माना गया है जो जनसंख्या का उचित प्रतिनिधित्व करने में सहायक हो। प्रतिदर्श का आकार भी निश्चित किया जाना जरूरी होने के साथ-साथ शिक्षा आयु एवं लिंग का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।

(II)

Krishna Nand M.A II Sem (3)

(५) सांख्यिकीय विधि (Statistical Analysis) - यहाँ प्राप्त आँकड़ो के विश्लेषण तथा निरूपण (Analysis and Interpretation) के लिए शोधकर्ता द्वारा उचित सांख्यिकीय प्रविधि का चुनाव किया जाता है। जब दो माध्यमान प्राप्त होता है तो इसके लिए टी-अनुपात (t-ratio) का उपयोग किया जाता है। जब दो या दो से अधिक माध्य की जाँच की आवश्यकता होती है तो काई-वर्ग (chi-square) या ANOVA का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार शोध से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं निर्वचन के लिए उचित सांख्यिकीय प्रविधि का चयन आवश्यक होता है।

(6) पायलट अध्ययन (Pilot study) - कभी-कभी शोधकर्ता द्वारा बड़ी जनसंख्या पर अध्ययन किया जाता है। वह ऐसी स्थिति में शोधकर्ता द्वारा बड़े अध्ययन से पूर्व एक छोटे स्तर पर प्रारम्भ अध्ययन किया जाता है। इसे पायलट अध्ययन कहा जाता है। इस अध्ययन के कारण शोधकार्य पूर्ण करने में बड़ी मदद मिलती और कोई-छोटी कठिनाईयों से शोधकर्ता को मुक्ति मिल जाती है क्योंकि पायलट अध्ययन के

Krishna Nand M.A II Sem (4)

1

समय इन का सामना शोधार्थी करता है और भविष्य के पूर्ण अध्ययन के लिए इसमें सुधार कर पाने में सफल हो जाता है।

(7) परिक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह (Test administration and data collection) — इस अवस्था को शोधकार्य का महत्व पूर्ण चरण माना गया है। इसलिए इसमें बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। थोड़ी सी शिथिलता पूरे शोधकार्य एवं ~~निष्कर्ष~~ परिणाम को प्रभावित करेगा। इसलिए काफी सावधानी ~~रखने~~ की आवश्यकता होती है। निश्चित क्षेत्र एवं समय के अनुसार शोधार्थी को प्रयोज्यों से मिलना पड़ता है। प्रयोज्यों को निर्देश देते समय पूर्ण स्पष्ट एवं सरल भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है। अगर सामूहिक परीक्षण आवश्यक हो तो यह ध्यान रखना पड़ता है कि वे एक दूसरे से छेड़छाड़ न करें और न ही आपस में नकल कर सकें। ऐसा नहीं होने पर अनुचित परिणाम मिलना कठिन हो जाता है और शोध विफल भी हो सकता है।